कैलेब और केट

विलियम, हिंदी : विदूषक

कैलेब और केट

कैलेब और केट

विलियम, हिंदी : विदूषक

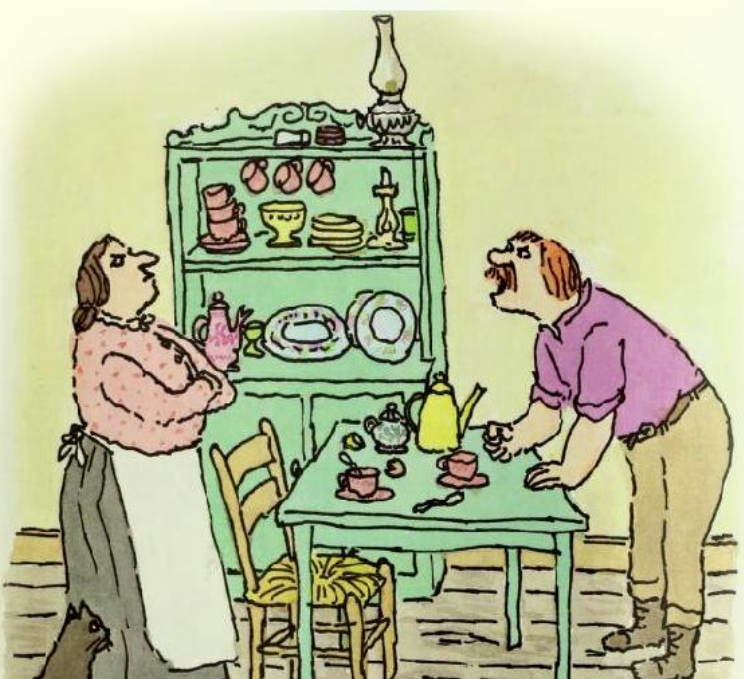

कैलेब बढ़ई था और केट एक बुनकर थी. दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते थे - पर हर मिनट नहीं. कभी-कभी छोटी-छोटी बातों पर उनमें मतभेद होता. फिर वो कुत्ते-बिल्ली जैसे लड़ते. उन्हें देखकर ऐसा नहीं लगता जैसे वो पति-पत्नी हों!

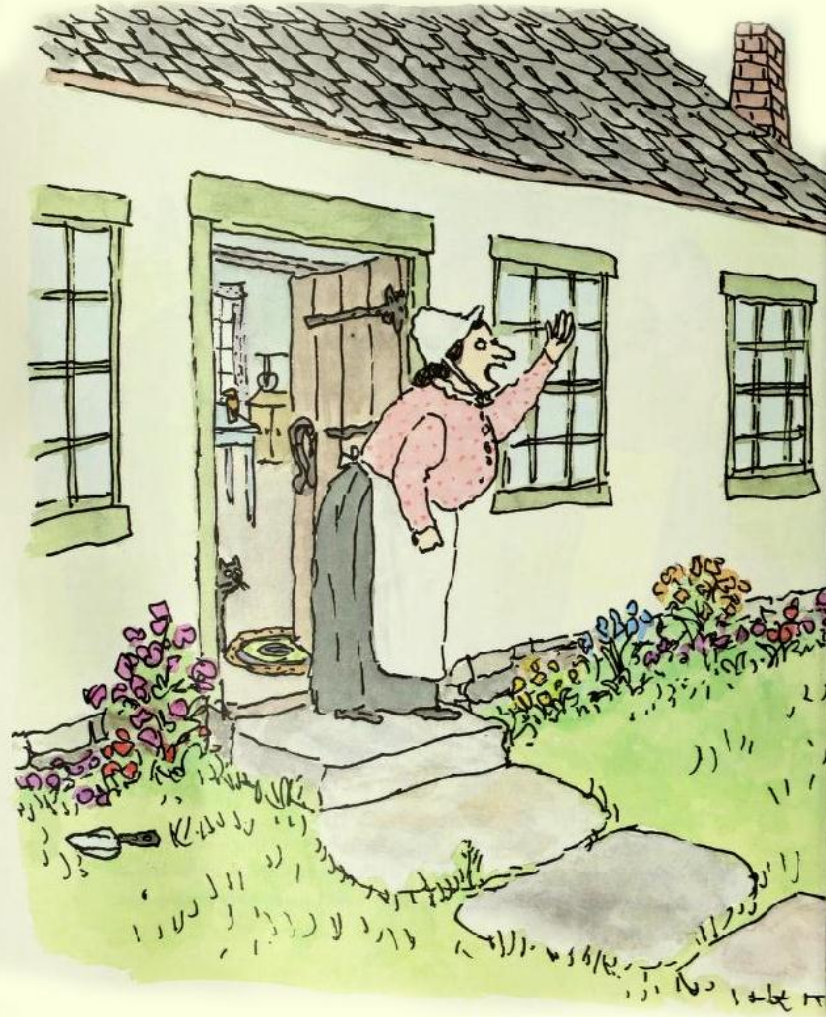

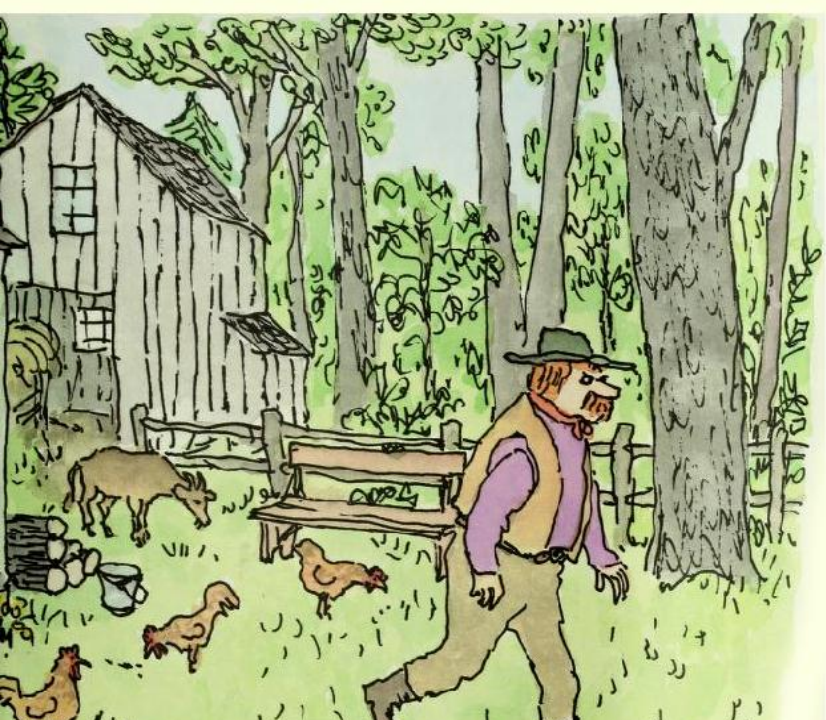

एक दिन ऐसी ही भीषण लड़ाई के बाद, कैलेब बहुत नाराज़ हुआ. पत्नी के प्रति गुस्सा दिखाने के लिए उसने घर का दरवाज़ा धड़ाम से बंद किया. केट के मुंह से अपने पति के लिए भद्दी-भद्दी, चुनिन्दा गालियाँ निकलीं.

कैलेब घर के पास के जंगल में घूमता रहा. क्यों मैंने उस बदमिजाज़ औरत से शादी की? वो सोचता रहा. पर कुछ देर टहल-कदमी करने के बाद उसका गुस्सा कुछ ठंडा पड़ा. फिर उसे यह भी याद नहीं रहा कि वो आखिर क्यों लड़ा था. उसे सिर्फ यह याद रहा कि वो अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करता था. अब उसे बस पत्नी का सुन्दर चेहर, उसकी मुस्कराहट, और उसका बनाया महकता टेस्टी, पुडिंग याद था.

घर जाकर पत्नी को गले लगाने और उसे पुच्ची देने की बजाए कैलेब ने कुछ देर जंगल में बाँझ के पेड़ों का मुआईना करने की सोची, जिससे कुछ दिन बाद वो उन पेड़ों को काटकर आरा मशीन ले जाए. जंगल में घूमते-घूमते उसके पैर थक गए. जब सुस्ताने के लिए कुछ देर वो लेटा तो अचानक उसकी आँख लग गई.

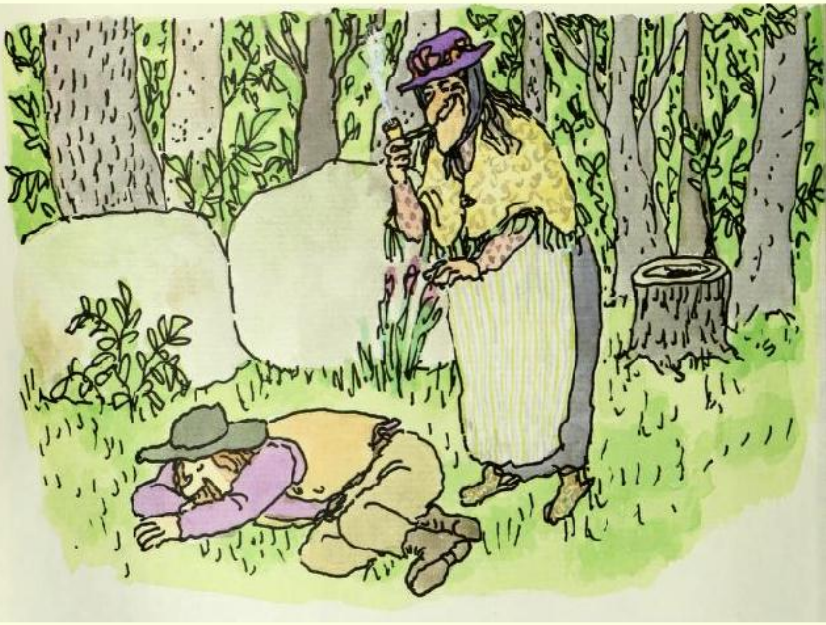

कुछ देर बाद वहां येदिदा नाम की चुड़ैल आई. वो जंगल में ही एक गुफा में रहती थी. वो अपनी चप्पलें फटकारती हुई आई. उसने कुछ मन्त्र बुदबुदाए. वो कैलेब के पास आकर रुकी, जो गहरी नींद में खर्राटें भर रहा था. "मैं कितने अच्छे मौके पर यहाँ आई हूँ!" उसने खुश होते हुए कहा. "मेरे चचेरे भाई ने मुझे जो नया जादू सिखाया है उसे टेस्ट करने का यह एक बढ़िया मौका है."

फिर येदिदा, कैलेब के पास बैठी और उसने अपने हड्डी जैसे पतले अंगूठे से कैलेब की दाईं तर्जनी उंगली छुई. उसने उसे हल्के से छुआ जिससे कैलेब जगे नहीं और साथ-साथ यह मंत्र भी पढ़ा:

अम्मी व्हाम्मी
इब्बिन बम्मी
अब तो होगा
बाउ, वाओ वाओ!

चुड़ैल के पांव के पास अब एक बढ़ई की बजाए एक कुत्ता सो रहा था. “कितना बढ़िया जादू है!!” चुड़ैल ने खुद से कहा. क्योंकि अब चुड़ैल दिन भर के अपने कुकर्म पूरे कर चुकी थी इसलिए वो ख़ुशी-ख़ुशी, गर्व के साथ अपनी गुफा में वापिस गई.

जब कैलेब की आँख खुली तो सूरज डूब चुका था. पहले उसने जम्भाई भरी, अपनी पीठ सीधी की और फिर अपनी बगल को सहलाया. अपने पैर के पंजे से? अरे! यह क्या हुआ! उसका मुंह खुला-का-खुला रह गया और वो बस घूरता ही रहा. जहाँ उसकी बेल्ट और पैन्ट होती, उस जगह पर अब कुत्ते के बालों वाले दो पैर थे!!

वो जल्दी से अपने पैरों पर खड़ा हुआ - चारों पैरों पर! वो बहुत डरा था. उसने मुड़कर खुद को देखने की कोशिश की. उसने जो देखा उसपर उसे यकीन नहीं हुआ. नहीं! नहीं! ऐसी चीज़ें नहीं होती हैं! बाप रे? “यह तो मैं, कैलेब ही हूँ,” उसे भान आया. “मैं कोई सपना नहीं देख रहा हूँ. अब मैं एक कुत्ता हूँ!”

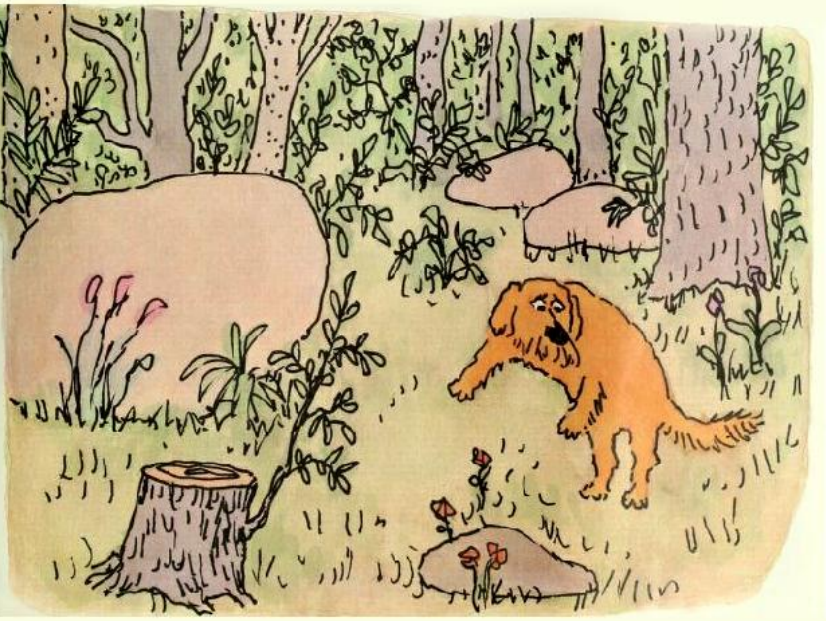

"अब मैं क्या करूं?" उसने सोचा. "अब मैं वापिस घर जाऊँगा, और सब कुछ बताने की कोशिश करूंगा." फिर अपने हालात से परेशान वो धीरे-धीरे घर की ओर बढ़ा. उसकी पूँछ लगातार बाएं-से-दाएं लहरा रही थी. यह भला दुनिया का कैसा अचरज था? वो अचानक कुत्ता कैसे बन गया? पर यह सच था. कुछ समय पहले तक तो वो कैलेब - बढ़ई था. उसके दिमाग में विचार भी कैलेब के ही थे. अब वो दौड़ा-दौड़ा अपनी बीबी - केट के पास घर जा रहा था. क्यों ठीक हैं ना? पर अब उसके चार पैर थे और उसका दिल बेहद उदास था.

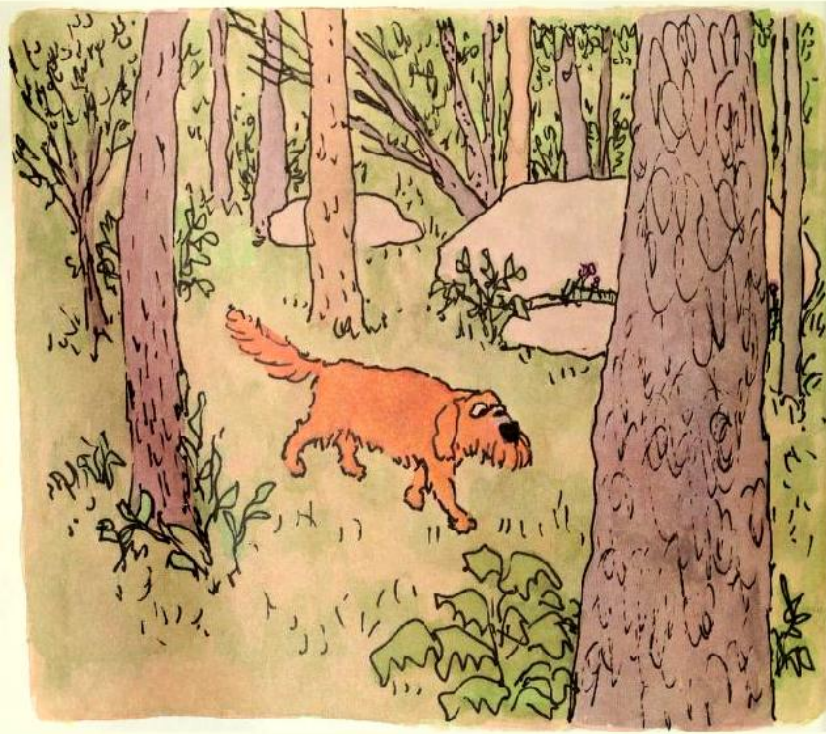

रात हो चुकी थी और चाँद आसमान में निकल आया था. बिचारी केट एक कमरे से दूसरे कमरे में चहलकदमी कर रही थी, और बार-बार कुर्सियों से टकरा रही थी. वो डरी और घबराई हुई थी. वो कई बार दरवाज़े के बाहर जाकर देख चुकी थी, पर कैलेब का वहां कोई अतापता नहीं था. क्या उसका पति उसे सदा के लिए छोड़कर चला गया था? उसने खुद से पूछा. नहीं! उसका पति उससे बहुत प्रेम करता था. वो यह बात बार-बार दोहराता था. हो सकता था - कैलेब उससे तंग आ गया हो. या फिर कैलेब के साथ कोई हादसा हुआ हो? क्या पता?

तभी कैलेब घर के दरवाज़े पर पहुंचा. वो अन्दर आने में हिचकिचा रहा था. कुत्ते के रूप में उसे शर्म महसूस हो रही थी. फिर उसने हिम्मत बंटोर कर दरवाज़े को अपने पंजों से खरोंचा. केट ने दरवाज़ा खोला. फिर कैलेब ने केट का फीका घबराया हुआ चेहरा देखा. वो अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ और उसने अगले दोनों पैर केट के एप्रन पर रखे और कहा "केट, यह मैं हूँ कैलेब!" पर उसके मुंह से सिर्फ एक घुर्राने की आवाज़ ही निकली. कैलेब ने बार-बार कोशिश की. उसने "केट! केट!" कहने की कोशिश की, पर कुछ फायदा नहीं हुआ.

"बेचारा, खोया हुआ कुत्ता लगता है!" केट ने कहा. केट ने कुत्ते को एक प्याले में कुछ पानी दिया और खाने को बचा हुआ मीट का टुकड़ा भी. कैलेब ने पेट भरकर पानी तो पी लिया, पर उसका खाने का कुछ मन नहीं हुआ. जब केट अपना शाल पहनकर बाहर जाने को हुई तो कैलेब को लगा वो उसे ही ढूँढने जा रही होगी. कैलेब ने केट के जूतों के फीते अपने मुंह में पकड़े और उसे जाने से रोका.

"एक तरफ बैठो, पागल कुत्ते," केट ने उसे डांटा. "मेरे पास अभी खेलने का वक्त नहीं है. मुझे अभी जाकर अपने प्रिय पति को खोजना है. हो सकता है कि वो किसी मुश्किल में फंस गया हो." तब कैलेब ने केट के फीते छोड़े, और वो भी उसके पीछे-पीछे चला.

वो चांदनी रात में जंगल में भटकते रहे. केट को भला कैलेब कैसे मिलता? वो तो केट के पीछे-पीछे चल रहा था.

अब उसका आकार और परछाईं एक कुत्ते की थी.

केट सुबह को हारी-थकी घर वापिस आई. उसके जूते ओस से गीले हो गए थे. फिर वो उस कुर्सी पर बैठे-बैठे सो गई जिसे कभी उसके पति कैलेब ने बनाया था. उसका पति अब उसके पैरों के पास बैठा था.

दोपहर को उठने के बाद केट ने कैलेब को जंगल में बहुत खोजा. कैलेब लगातार उसके पीछे-पीछे चलता रहा. थोड़ी-थोड़ी देर में वो रूककर ज़मीन को सूंघता. वैसे उसकी कोई ज़रुरत नहीं थी.

उसके बाद केट शहर में गई और वहां उसने शराबखाने, पोस्ट ऑफिस, दुकानों और सड़क पर लोगों से पूछताछ की.

सब लोगों ने अपनी चिंता व्यक्त की और मदद का आश्वासन दिया. पर उनमें से किसी ने भी कैलेब को नहीं देखा था.

जब केट रात को पलंग पर सोने गई तो कैलेब भी अपने सही स्थान – केट की बगल में जाकर लेटा. वो केट के शरीर से लिपटा और उसने उसके गले को चूमा. कैलेब रोज़ ही ऐसा करता था. फिर उसने अपने दिन का दुखड़ा सुनाया. केट को कुत्ते की गर्माहट अच्छी लगी. कुत्ते की संगत में उसने खुद को कम अकेला महसूस किया.

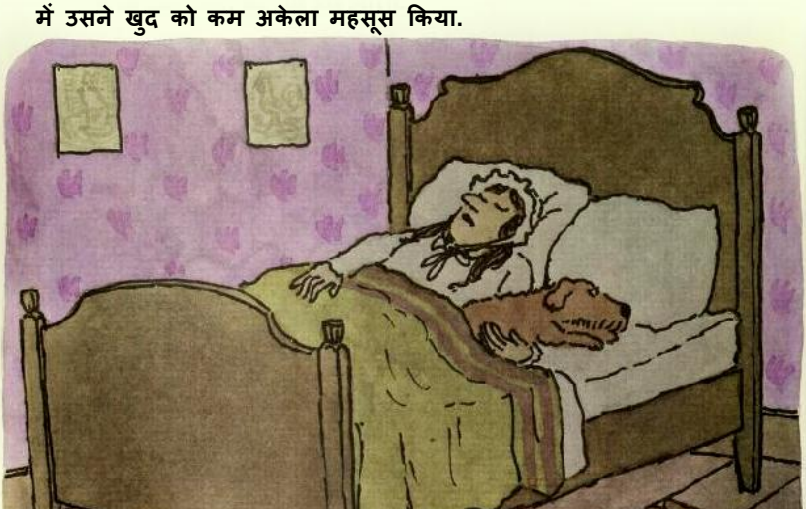

फिर केट अपने हाथ कैलेब की बाँहों में डालकर सो गयी. पर कैलेब पूरी रात जागता रहा – चिंता करता, सोचता रहा. वो अपनी असलियत केट को कैसे बताए? वो उसे कैसे बताए कि जो कुत्ता, केट की बाहों में था वो उसका प्रिय पति कैलेब ही था! वो इंसान की पूर्व स्थिति में कैसे लौटे? अगर केट भी कुत्ता बन जाए तो? क्या फिर वो दोनों ख़ुशी-ख़ुशी साथ रह पाएंगे?

केट ने कुत्ते को अपने पास रखने का निश्चय किया. वो कुत्ते के लिए एक कालर लाई, जिसपर पीतल के बटन लगे थे. कुत्ता लाल रंग का था, बिल्कुल उसके पति के बालों की तरह, इसलिए केट ने उसे रूफ़स नाम दिया. केट ने कुत्ते को कुछ ट्रिक्स सिखाईं – पिछले पैरों पर खड़े रहना, बैठना, शेक-हैंड करना, चीज़ों को लाना, भों-भों के हिसाब से चीज़ें गिनना आदि. जब रूफ़स ने यह सब बातें झट से सीखीं तो केट चकित रह गई.

जब कभी केट के मित्र घर आते तो केट बड़ी शान से उन्हें अपना कुत्ता दिखाती. कुत्ते को भी लोगों की संगत, उनकी बातचीत में मज़ा आता. पर जब उसके पुराने दुश्मन उसका सिर सहलाते तो उसे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता.

केट को अपने कुत्ते से प्रेम हो गया था. वे एक-दूसरे के संग रहते, पर वे एक-दूसरे से खुश नहीं थे. केट को हमेशा अपने खोए पति की याद आती. उसे अभी तक यह समझ में नहीं आया था कि उसका पति उसे छोड़ कर क्यों गया था. कैलेब को लगता – काश वो बोल पाता और केट को पूरी कहानी सुना पाता! वो केट के पैरों के पास ही लेटकर एक हड्डी चबाता रहता, और केट अपनी बुनाई करती रहती. कभी-कभी केट की आँखों से आंसू गिरते, और वो बुझे-दिल से खिड़की के बाहर घूरती रहती. तब कैलेब अपने पंजे उसकी गोद में रख देता और उसके चेहरे को चाटता. फिर केट, कुत्ते के कान और पीठ सहलाती और कहती कि इतने वफादार कुत्ते को पाकर वो कितनी खुशनसीब थी.

एक दिन जब कैलेब पेड़ के नीचे आराम कर रहा था और ताज़ी घास सूंघ रहा था तब कुछ और कुत्ते आए और वो उनके साथ खेलने निकला. कैलेब को यह बहुत अच्छा लगा. पर जल्द ही वो उन्हें छोड़कर घर वापिस आया. बाकी कुत्तों की घर में घुसने की हिम्मत नहीं पड़ी. कैलेब को कुत्तों के साथ खेलने में बड़ा मज़ा आया, पर वो अपनी सच्ची असलियत को भूलना नहीं चाहता था.

वो कुत्ते एक-दो बार और आए पर फिर कैलेब ने उन्हें कोई लिफ्ट नहीं दी. उसके बाद कुत्तों ने आना बंद कर दिया.

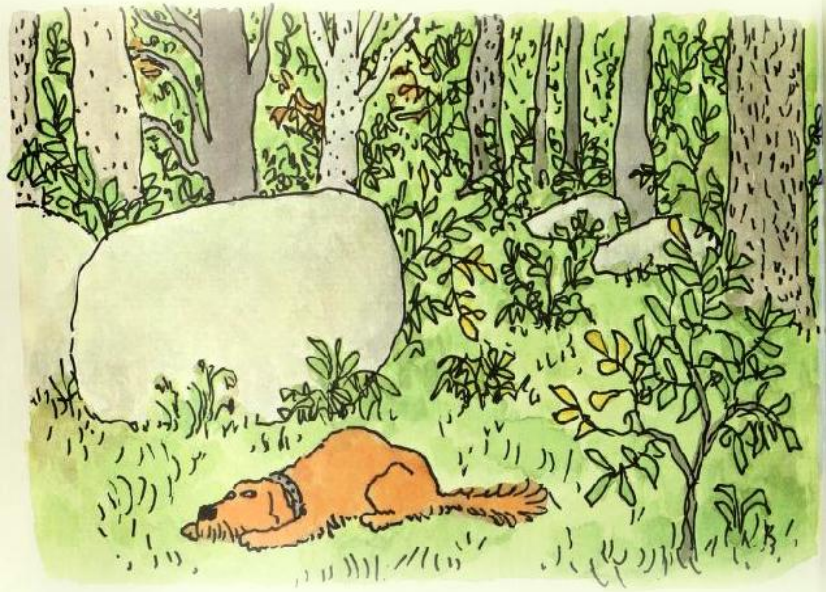

इस तरह एक के बाद एक करके कई महीने बीत गए. इस बीच कैलेब अक्सर उस स्थान पर जाता, जहाँ वो कुत्ते में बदला गया था. उसे लगा कि शायद उस स्थान पर उसे अपनी मुक्ति का कोई संकेत मिले. वो जिस स्थान पर सोया था वो वहीं पर लेट गया और सोने का नाटक करने लगा. पर असल में वो आँख के कोने से सब कुछ देख रहा था. उसके आसपास गिलहरियाँ घूम रहीं थीं, पेड़ की टहनियों पर चिड़ियें चहचहा रही थीं, पत्तियां हवा में हिल रही थीं और अनेकों कीट संगीत रच रहे थे. कभी-कभी कोई टिड्डा हवा में छलांग लगाता था. कैलेब को कुछ ख़ास दिखाई नहीं दिया. कैलेब ने कई पौधे इस उम्मीद में चूसे कि शायद वो फिर से आदमी बन जाए. पर ऐसा कुछ नहीं हुआ.

उसके बाद सर्दी आई और स्नो पड़ी. अब कैलेब को कुत्ते के अवतार में आठ महीने हो गए थे. वो अलाव के पास बैठा रहता और अपने आपको ठंड से गरम रखता. वो केट को घर में इधर-उधर जाते हुए देखता. क्या वो कभी केट को यह असलियत बता पाएगा? वो यह उम्मीद छोड़ चुका था. अगर केट को कुत्ते की असलियत पता चलती तो क्या होता? क्या वो खुश होती? कम-से-कम उसे यह तो पता चलता कि पति ने उसे त्यागा नहीं था. पर क्या पति की जगह उसे कुत्ता पसंद आता? शायद नहीं, कैलेब को लगा.

क्रिसमस के कुछ दिन बाद, तारों भरी एक रात घर में चोरों ने प्रवेश किया. तब सब लोग सो रहे थे. चोरों ने चुपके से खिड़की खोली और फिर घर में घुसे. उनके साथ बर्फ जैसी ठंडी हवा भी घर में आई. कैलेब तुरंत उठ गया और चोरों पर भूँकने लगा. वो सीधा चोरों पर लपका.

"इस कुत्ते को ठिकाने लगाओ!" छोटा चोर, कुत्ते से बचते हुए चिल्लाया. कैलेब ने अपने मुंह में उसका हाथ दबोच लिया. ऊंचे वाले चोर ने कैलेब का कालर पकड़कर खींचा पर कैलेब अपने दांत गढ़ाए रहा.

इस शोर-शराबे में केट की आँख खुल गई. उसने देखा कि उसका बहादुर कुत्ता दो चोरों से लड़ रहा था. केट अपने कुत्ते की मदद के लिए दौड़ी. जो चोर कैलेब का कालर पकड़े था, केट ने जोर से उसके बाल खींचे. उस चोर ने पलटकर केट को ज़मीन पर पटक दिया और उसे अपनी दाढ़ी में से गालियाँ देने लगा. उसी समय कैलेब लपका और उसने चोर को अपने नुकीले और डरावने दांत दिखाए. चोर ने अपना चाकू निकाला और फिर वो कैलेब को मारने दौड़ा. चाकू से कैलेब का अगला पंजा थोड़ा सा छिल गया.

यह तो कमाल का जादू है! कैलेब को कुछ दर्द भी नहीं हुआ. उसने सिर्फ एक बार "आंह" भरी और फिर चोट लगे पंजे को अपने मुंह में रखा. उसे आश्चर्य हुआ जब वो "पंजा" उसके "हाथ" में बदल गया. चोर ने उसके उस वाले पंजे में चोट पहुंचाई थी जिससे येदिदा चुड़ैल ने जादू घुसाया था. अब जादू ख़त्म हो गया था! कैलेब फिर दुबारा कैलेब बन गया था. वो अपने पुराने कपड़े ही पहने था.

"मैं हूँ!" कैलेब ख़ुशी से चिल्लाया. केट उसे आश्चर्य से देखती रह गई. "कैलेब!" वो ख़ुशी से चिल्लाई. दोनों चोर यह सब देखकर डर के मारे खिड़की से रफूचक्कर हो गए. वो इतनी तेज़ दौड़े कि स्नो में उनके पैरों के निशान तक नहीं बने.

कैलेब और केट दोनों एक-दूसरे की बाहों में समा गए.

काफी समय बाद जब वो अपने पूरे होश में आए, तब कैलेब ने केट को पूरी कहानी बताने की कोशिश की - कम-से-कम उतनी, जितनी वो समझा पाया था. पर असलियत कभी किसी को पता नहीं चली. बहुत सी चीज़ें हमेशा एक रहस्य बनी रहती हैं.

कैलेब और केट

नोटएबिल ALA (अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन) बुक.
बच्चों के लिए एक अन्यंत सुन्दर और सचित्र किताब.